© 2010 IJSRST | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

मालतीमाधव में धर्मशास्त्रीय सन्दर्भ

वीरेन्द्र कुमार मौर्य
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मालतीमाधवम् प्रकरण के आरम्भ में भवभूति ने अपने परिवार के लोगों की प्रशंसा करते हुए विद्यानुराग तथा धर्मशास्त्री निष्ठा का निरूपण किया है। दक्षिण देश के पद्मपुर के निवासी ब्राह्मण अपने ज्ञान का आदार धर्माद्यनुष्ठान के तत्त्व का निर्णय करने के लिए धन संग्रह इष्टापूर्त के लिए दारा,ग्रहण संतान के लिए एवम् आयु की अपेक्षा तप के लिए करते है।[1] इस प्रकार वे एक आदर्श कर्मकाण्डी ब्राह्मण थे। इष्टापूर्त कर्म यज्ञादि अनुष्ठानों तथा पूर्त कर्म के अनुष्ठान का बहुधा वर्णन है। कठोपनिषद् में भी इसका उल्लेख है।[2] यह कर्म नित्य तो नहीं था किन्तु विशिष्ट अवसरों पर इसका अनुष्ठान हेाता था श्रौत एव स्मार्त कर्मो को जिन्हें अग्नि की सहायता से सम्पन्न किया जाता था। इष्ट कर्म कहा गया है और दान तडाग,उद्यान आदि के निर्माण को पूर्त कर्म कहा गया है।[3] इन कर्मो का सम्पादन धन का उचित उपयोग माना जाता था। भवभूति को इस बात का गर्व है कि उनके परिवार में उक्त धर्मशास्त्रीय विधान अनवरत चलता है।

इस प्रकरण के द्वितीय अंक में मालती के नन्दन से विवाह की सूचना प्राप्त होती है। यह नन्दन मालती से विवाह के योग्य नहीं है। अत एव सर्वत्र निन्दा हो रही है। कामन्दकी कहती है कि वर में जिन गुणों की अपेक्षा की जाती है। उनसे शून्य होन पर भी नन्दन को मालती दी जा रहीं है। यह महान् आश्चर्य है। वह यह भी कहती है कि कूटनीति में निष्णात होने के कारण राज को अपनी सन्तान का स्नेह नहीं रहा। अपनी पुत्री देकर राजा नन्दन को अपना मित्र बनाना चाहते है।[4] यहाँ पर भवभूति भारतीय इतिहास की उस परम्परा की ओर संकेत करते है। लिसमें किसी राजा को अपना मित्र बनाने या मित्रता के उपहार स्वरूप अपनी पुत्री को दान किया जाता था। सामान्य जनता भीतर ही भीतर कष्ट का अनुभव करती रहती क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह आकांक्षा होती थी कि कीसी की पुत्री का विवाह उचित वर के साथ हो ।

तृतीय अंक के प्रवेशक में मालती के द्वारा शिवपूजा की चर्चा की गई है। अवलोकित कहती है कि आज कृ ष्ण पक्ष की चतुर्दशी है, इसलिए माता के साथ मालती शिव के मन्दिी मे जायेगी।[5] मालती की यह धारणा है कि हाथों से चुने गये पुष्पों से शिव की पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है।

इस प्रकरण के चतुर्थ अंक में धर्मशास्त्र के विषय में महत्त्वपूर्ण विवेचन प्राप्त होता है। कामन्दकी कहती है कि मनुष्यों का व्यवहार तथा पारिवारिक कृत्य वाणी पर आश्रीत है–

वाक्प्रतिष्ठानि देहिनां व्यवहारतन्त्राणि।[6]

वाणी अर्थात् वचन का निर्वाह अवश्य करना चाहिए इस विषय में मनु का भी कथन है कि सभी अर्थ वाणी पर आश्रित है। इसलिए वाणी का निर्वाह करना चाहिए। वचन देकर उससे हटना नहीं चाहिए।[7] कामन्दकी इस प्रसंग में आगे कहती है कि मनुष्यों की धर्माधर्ममूलक व्यवस्थाएँ अर्थात् समस्त शास्त्रीय मर्यादाएँ वचन के अधीन हेाती है। वा भूरिवसु के इस वाक्य का विरोध करती है कि अपनी कन्या के विषय में राजा प्रमाण है। एक तो मालती राजा की अपनी कन्या नही है और दूसरी बात यह है कि कन्यादान के विषय में राजा अकेले का कोई प्रभुत्व नहीं हेाता। धर्मशास्त्र और सदाचार का यह सिद्धान्त नहीं है। वस्तुतः कन्यादान का निश्चय क्रमशः पिता,पितामह,भाई अपने कुल के व्यक्ति तथा माता को करने का अविष्कार है।[8] विवाह संस्कार का संक्षिप्त परिचय मालतीमाधव के पष्ठ अंक में प्राप्त होता है प्रतिहारी आभूषणों का पात्र हाथ में लिए हुए जाती है । देवमन्दिर में विवाह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। विवाह की सामग्री को प्रतिहारी क्रमशः दिखती है कि यह युगल श्वेत रेशमी वस्त्र है, यह अत्तरीय के लिए रक्तवर्ण वस्त्र है। समस्त अंकों में धारण करने योग्य ये अलंकार है। ये मोतियों के हार है। यह चन्दन है और यह श्वेत पुष्पों का शिरोभूषण है। कामन्दकी एकान्त स्थान में शास्त्र के अनुसार अलंकारों और रत्नों की परीक्षा करने प्रस्ताव रखती है। विवाह के अंग के रूप में वह धार्मिक व्यवस्था थी जिसे लोकाचार के द्वारा विस्तृत किया गया। इसलिए आगे कहती है–

सखि! अयमंगरागः इमाः कुसुमामालाः।[9]

अंगराग का विवाह संस्कार में विरोध महत्त्व है। वर और वधु को सुन्दर बनाने के लिए उनकी त्वचा को कान्तिपूर्ण बनाने के लिए अंगराग लगाने की रीति अब भी है। इसी प्रकार कुसुममाला का वर–वधु परस्पर आदान प्रदान करते है। भवभूति विवाह के अवसर पर कंकण(कंगन) बाँधने की परम्परा का भी निर्देश करते है। वहा पर मकरन्द कहता है–

आबद्धकंकणकरप्रणयप्रसादमासाद्य नन्दतु,चिराय फलन्तु कामाः।[10]

अर्थात् कंकण धारण करने वाले तुम्हारे हाथ का प्रेम प्रसाद प्राप्त कर माधव प्रसन्न हो तथा चिरकाल तक मनोरथ सफल हो। ककंण धागे का बना होता है जो किसी यज्ञ या पूजा में दीक्षा का प्रतीक है। विवाह के अवसर पर पुरोहित इसे वधू के हाथ में बाँध देते है। विवाह संस्कार की समाप्ति आशीर्वचन से होती है जिसमें वर–वधू के कारण ही कामना उनके बान्धव करते है। भवभूति ने मालतीमाधव में वर–वधू को आशीर्वाद के स्थान पर धार्मिक उपदेश दिया है। कामन्दकी कहती है कि प्रिय मित्र सभी बन्धु बान्धव समस्त कामनाएँ,समस्त सम्पत्ति या समस्त जीवन के रूप में स्त्रियों के लिए पति होता है और पुरुषों के लिए उसकी पत्नी होती है– यह बात तुम दोनों बच्चों को अर्थात् मालती और माधव को ज्ञात होनी चाहिए–

प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा सर्वे कामाः शेवधिजीवितं वा।
स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसामित्यन्योन्यं वत्सयोर्ज्ञातमस्तु।।[11]

इस प्रसंग की तुलना कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में महर्षि कण्व के द्वारा शकुन्तला और दुष्यन्त को पृथक्–पृथक् दिये गये उपदेशों से की जा सकती है। विवाह के अनन्तर वर के गृह में नववधू का गृह प्रवेश एक उत्सव के रूप में मनया जाता है। मालती और माधव का विवाह गुप्तरूप से हुआ था। इस लिए यह

समारोह किसी अन्य व्याज से किया जा रहा है। अतएव सप्तम अंक के आरम्भ में बुद्धिरक्षिता कहती है कि आज असमय में कौमुदीमहोत्सव का आयोजन हो रहा है,जिससे सभी परिजन अस्त –व्यस्त हो गये है।[12]

मालतीमाधव के नवम अंक में मरणोत्तर संस्कार का एक अल्प संकेत किया गया है। माधव के मुर्च्छित हो जाने पर उसका प्रिय मित्र मकरन्द विलाप करता है कि जन्म से आज तक हम दोनों साथ–साथ रहें है, माता का दुग्ध भी साथ–साथ पिया है और आज तुम अकेले अपने बन्धुओं के द्वारा दिये गये निवापसलिल अर्थात् तर्पण जल को पीओगे यह सर्वथा अनुचित है।[13]

सन्दर्भ सूची

1.ते श्रोत्रियास्तत्त्वविनिश्चयाय भूरि श्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते।

इष्टाय पूर्ताय च कर्मणेऽर्थान् दारानपत्याय तपोऽथमायुः।।मालतीमाधव 1/7

2. कठोपनिषद् 1/1/8

3.याज्ञवल्क्यस्मृतिः,मिताक्षरा 2/118–19

4.मालतीमाधव 2/7

5. मालतीमाधव 3/पृष्ठ 104

6. मालतीमाधव 4/4 का गद्य 156

7. वाच्यर्थां नियताः सर्वेः वाङ्मूला वाग्विनिः सृताः।

तान्स्तु यः स्तेनयेद्वार्य स सर्वस्तेयकृन्नरः।।मनुस्मृति 4/256

8.पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा।

कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः।।याज्ञवल्क्यस्मृतिः1/63

9.मालतीमाधव 6/7 पृष्ट226

10.मालतीमाधव 6/14

11.मालतीमाधव 6/18

12. अयं च नववधूगृहप्रवेशविरचिताकालकौमुदीमहोत्सवप्रमत्तपर्याकुलाशेषपरिजनः ।।मालतीमाधव 7/आरम्भ पृ0255

13.आजन्नः सहनिवासितया मयैव मातुः पयोधरपयोऽपि समं निपीय।

त्वं पुण्डरीकमुखबन्धुतया निरस्तमेको निवापसलिलं पिबसीत्युक्तम्।।मालतीमाधव 9/40